

“वचन देहधारी हुआ”

(1:14-18)

विरोधाभास एक दूसरे का विरोध करने वाले शब्दों के मेल को कहा जाता है “विरोधाभास” का अंग्रेजी शब्द “oxymoron” अपने आप में यूनानी शब्दों का मेल है जिनका अर्थ “तीव्र/मंद” है। “कड़वी-मिठाई,” “विराट-बौना,” और “क्रूर-दया” आदि शब्द इसके कुछ उदाहरण हैं।

यह विशेष संरचना यूहन्ना 1:14-18 का मूल आधार है। यूहन्ना रचित सुसमाचार की पहली तरह आयतें उस वचन से हमारा परिचय करवाती हैं, जो “आदि में था,” “परमेश्वर के साथ था,” और “परमेश्वर था।” ये दावे इतने स्पष्ट हैं, कि उन्हें स्वीकार करने में हमें इतनी कठिनाई नहीं होगी क्योंकि हम परमेश्वर के बारे में तेजस्वी दावे पहले से ही सुनते आ रहे हैं। यूहन्ना 1:14 में “समस्या” यह बताई गई है कि परमेश्वर देहधारी हुआ। यह कहा जा सकता है कि यीशु को समझने के लिए कि वह कौन है विरोधाभास परमेश्वर/देहधारी को समझने का आरम्भ है।

वह देहधारी हुआ

“और वचन देहधारी हुआ ...” (1:14)। यीशु का परिचय ईश्वरीय वचन के रूप में जो आदि से था और जिसके द्वारा सब कुछ रचा गया करवाने के बाद, यूहन्ना 1:14 एक चौंकाने वाला दावा करता है कि वह वचन देहधारी हुआ। यीशु के बारे में समझने के लिए “देहधारी” साधारण, सांसारिक, निम्न स्तर की, और लगभग अशोधित भाषा थी। यूहन्ना के कहने का तात्पर्य था कि यीशु 50 प्रतिशत ईश्वरीय या 50 प्रतिशत मनुष्य नहीं बल्कि 100 प्रतिशत मनुष्य बना। यीशु ने मनुष्य होने को पूरी तरह अनुभव किया था। उसका जन्म एक बालक के रूप में हुआ, पुरुष बनने के लिए वह बड़ा हुआ और भूख, प्यास, पीड़ा, क्रोध और दुख की भावनाओं से अवगत था। यह कहना कि यीशु मनुष्य ही था, हमेशा अपमानजनक बात लगती है। उदाहरण के लिए, जब आप मरियम, यूसुफ और बालक यीशु के चरनी में होने की तस्वीर देखते हैं तो क्या आपके मन में यह विचार नहीं आता कि उसके कपड़े गंदे होंगे? यह सब कुछ आपको बुरा लग सकता है, परन्तु “देहधारी” शब्द से पता चलता है कि ऐसा नहीं बल्कि इससे भी बुरा हो सकता है।

उदाहरण के लिए, क्या आप मानते हैं कि यीशु की सचमुच में परीक्षा हुई थी? क्या

यीशु ने कभी कोई गलत काम करने की इच्छा की थी? एक क्षण के लिए इस पर विचार करें। याकूब ने लिखा है, “प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है” (याकूब 1:14, 15)। क्या यीशु कभी “अपनी ही अभिलाषा से खिंचा” था? इब्रानियों की पत्नी के लेखक ने लिखा है कि यीशु अर्थात् हमारा महायाजक, “सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला” (इब्रानियों 4:15)। हमारे प्रश्न का उत्तर फिर नहीं मिलता कि “क्या निष्पाप मसीह ने कभी कोई गलत काम करने की चेष्टा की थी?” मेरा मानना है कि पवित्र शास्त्र का उत्तर डंके की चोट पर कहता है “हां!” उदाहरण के लिए, अपने पकड़वाये जाने की रात गतसमनी के बाग में यीशु क्या चाहता था? उसने प्रार्थना की, “हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो” (लूका 22:42)। क्या इसमें यह नहीं लिखा गया है कि यीशु अपने पिता की इच्छा से कुछ उलट चाहता था? हम सभी इस बात के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं कि वह पिता की इच्छा से ऊपर तो चाहता था, परन्तु हमें इस तथ्य की अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि यीशु “देहधारी” हुआ और उसने देह पर आने वाली सभी परीक्षाएं दी थीं।

हमें यह मानना कठिन लग सकता है क्योंकि हम “प्रभु और परमेश्वर” के रूप में यीशु के बारे में बहुत कुछ सुनते हैं। हो सकता है कि उसे एक मनुष्य के रूप में देखना हमें अजीब लगे। यहां तक कि परमेश्वर की निन्दा करना लगे! अमेरिका में सत्तर के दशक में कई वर्ष तक चलने वाले “द वाल्टन्स” टीवी कार्यक्रम से मिली इस समस्या का एक उदाहरण मुझे आज भी याद है। एक किशत में सबसे बड़े बेटे बोय वाल्टन को किसी लड़की से प्रेम हो जाता है। उसकी मुलाकात एक सुन्दर लड़की से हो जाती है जो उसका दिल चुरा लेती है। रोमांस से भरा, परन्तु घबराया हुआ, जॉन बोय अपने पिता के पास परामर्श लेने के लिए जाता है। वह पूछने लगता है “पिता जी” “क्या आपने कभी किसी से प्रेम किया है?” उसका पिता अपना काम छोड़कर खीझते हुए कहता है, “अभी भी करता हूँ!” पहले से अधिक घबराए हुए, जॉन बोय ने फिर से अपना प्रश्न पूछने की कोशिश की। “नहीं, मेरे कहने का भाव है कि किसी लड़की से?” उसके पिता ने उत्तर दिया, “बेटा, मुझे नहीं लगता कि तेरी मां को यह प्रश्न अच्छा लगेगा!”

बच्चों को अपनी मां के बारे में एक महिला या पिता के बारे में एक पुरुष के रूप में विचार करना कठिन लग सकता है। अपने बच्चों के लिए वे माता-पिता, सम्भाल करने वाले, नायक और उनके सब कुछ होते हैं। वे किसी के साथ उनके प्रेम सम्बन्धों की कल्पना भी नहीं कर सकते। इसी तरह मसीहियों के लिए भी कभी-कभी यीशु के मनुष्य बनने और “वचन देहधारी हुआ” के तथ्य को मानना कठिन हो जाता है!

उसने अपना तम्बू लगाया

यूहन्ना की भाषा और भी स्पष्ट हो गई जब उसने कहा कि देहधारी होने वाले वचन ने

“हमारे बीच में डेरा किया” (1:14)। “डेरा किया” शब्द का अक्षरशः अर्थ, “तम्बू लगाना” है। इसमें यह विचार मिलता है कि किसी ने हमारे पड़ोस में आकर हमारे बीच अपना निवास बना लिया है। यीशु ने ऐसा ही किया! वह केवल अल्प अवधि के लिए ही नहीं आया था। उसने यहां आकर अपना पता बदलकर “पृथ्वी” कर लिया था और दिन भर के कामकाज से अपने हाथ गंदे किए थे। हमारे बीच में उसके होने की बात मनुष्यजाति के लिए उसका बहुत बड़ा उपहार है।

यीशु ने आकर “हमारे बीच में डेरा किया” के तथ्य के महत्व को एक फारसी राजा की पुरानी कहानी से समझाया जाता है। शाह अब्बीस एक बहुत अच्छा राजा था जो अपने लोगों से प्रेम करता था। उन्हें अच्छी तरह समझने के लिए, वह प्रायः एक साधारण व्यक्ति के भेष में सार्वजनिक स्थानों पर जाता था। एक दिन वह सार्वजनिक गुसलखाने में उस दरवाजे से होकर गया जो तहखाने तक जाता था और वहां वह एक निर्धन व्यक्ति के पास बैठ गया जो गुसलखाने को गर्म रखने के लिए भट्टी जला रहा था। राजा ने जल्द ही उस दरिद्र श्रमिक से दोस्ती कर ली और उसे भी अच्छा लगा। वह भट्टी जलाने वाले अपने नए मित्र के पास आने जाने लगा जो अभी भी उसके बारे में कुछ नहीं जानता था। भोजन के समय वह किसान उस राजा के साथ सतू आदि बांटकर खा लेता था। अन्त में, राजा ने उसे अपने बारे में बता दिया। पिछले अनुभव के आधार पर शाह अब्बीस को लगा था कि वह भट्टी जलाने वाला उससे किसी विशेष उपहार या कृपादृष्टि की मांग करेगा। इसके विपरीत, राजा की वास्तविकता जान लेने पर उस व्यक्ति ने राजा के पास न तो धन के लिए और न ही कृपादृष्टि के लिए बिनती की। उसने केवल इतना ही कहा:

आप इस अंधेरे स्थान में मेरे साथ बैठने, मेरा साधारण सा खाना खाने, मेरे प्रसन्न या उदास मन को सहारा देने के लिए अपने महल और शान को छोड़कर आए हैं। दूसरों को आप अच्छे-अच्छे उपहार दे सकते हैं, परन्तु मुझे आपने अपना आप ही दे दिया, आपसे मेरी यही बिनती है कि आप अपनी मित्रता का उपहार मुझसे कभी न छीनें।¹

हमने उसकी महिमा देखी

यीशु न केवल देह धारण कर हमारे बीच रहा, बल्कि उसने हमें उसे देखने और उसके जीवन को जांचने की अनुमति भी दी! यूहन्ना ने इसे 1:14 में यह कहते हुए व्यक्त किया है, “... हमने उसकी महिमा देखी, जैसी पिता के इकलौते की महिमा।” “महिमा” ऐसा शब्द है जिसका पवित्र शास्त्र में बहुत बड़ा अर्थ है। अगली आयतें दो उदाहरण हैं कि पुराने नियम में “महिमा” शब्द का इस्तेमाल कैसे होता था। पहला उदाहरण जंगल में इझाएल के घूमने के समय का है:

तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवास स्थान में भर गया। और बादल जो मिलापवाले तम्बू पर ठहर गया, और यहोवा का तेज

जो निवास स्थान में भर गया, इस कारण मूसा उस में प्रवेश न कर सका (निर्गमन 40:34, 35)।

दूसरी आयत सुलैमान के मन्दिर के बनने और समर्पण के समय से ली गई है:

जब याजक पवित्र स्थान से निकले, तब यहोवा के भवन में बादल भर आया। और बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था (1 राजा 8:10, 11)।

दोनों आयतों से पता चलता है कि “महिमा” या तेज “परमेश्वर की उपस्थिति” को व्यक्त करने का एक ढंग है। यह कहने का अर्थ कि यहोवा का तेज वहां था, यह है कि परमेश्वर वहां था। सी. एच. डॉड ने “महिमा” या तेज को “मानवीय अनुभव की पहुंच के ढंग से, परमेश्वर के अस्तित्व, स्वभाव तथा उपस्थिति को दिखाने” के रूप में की है।¹ इसलिए यूहन्ना कह रहा था कि यीशु नामक उस मानवीय जीव में, मनुष्य जाति परमेश्वर की उपस्थिति को देख सकती थी। यूहन्ना ने इन सच्चाइयों को सुसमाचार के आरम्भ में लिखा है जिन्हें उसने यीशु के जीवन के बारे में बताना चाहा! सार में, वह कह रहा था, “उसे निकट होकर देख लो, क्योंकि जो तुम देखोगे वह लोगों के साथ किसी भले आदमी के व्यवहार से कहीं बढ़कर है अर्थात् उसमें तुम्हें परमेश्वर की महिमा देखने को मिलेगी!” यीशु ने जो कुछ भी कहा और किया उस सब में पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा दिखाई दी थी। यीशु में, “शरीर” में भी “महिमा” का प्रकाश था।

एक टीकाकार ने एक प्रश्न सुझाया है, जो मेरे विचार से यूहन्ना रचित सुसमाचार में महिमा को समझने में हमारी और भी सहायता कर सकता है।² उसने पूछा है कि यीशु के रूपांतरण की कहानी यूहन्ना रचित सुसमाचार में क्यों नहीं दी गई, जबकि यह शेष तीन पुस्तकों में मिलती है³ और यूहन्ना उस घटना का चश्मदीद गवाह था। यह महिमा का सम्पूर्ण उदाहरण लगेगा, जब “उसका मुंह सूर्य की नाई चमका और उस का वस्त्र ज्योति की नाई उजला हो गया” (मत्ती 17:2)। फिर सुसमाचार की इस पुस्तक में जो चारों में सबसे अधिक महिमा की बात करता है, यूहन्ना ने यीशु के रूपांतरण का विवरण शामिल क्यों नहीं किया? शायद इसलिए क्योंकि यूहन्ना इस सत्य पर ध्यान केन्द्रित कर रहा था कि यीशु के सम्पूर्ण जीवन से देह में परमेश्वर की महिमा प्रकट की गई थी। यदि यूहन्ना यीशु के रूपांतरण की बात लिखता, तो हो सकता था कि अन्य घटनाओं की उपेक्षा हो जाती। यीशु की अन्य बातों और कामों में से परमेश्वर की महिमा की उपेक्षा करके यूहन्ना के पाठक रूपांतरण के बारे में कहते, “यूहन्ना इसी महिमा की बात कर रहा था कि हम इसे देखेंगे।” इस सुसमाचार में, हमारे बीच डेरा करने के समय हमने स्पष्ट रूप से परमेश्वर की महिमा देखी है!

उसने परमेश्वर को प्रकट किया

यीशु के विषय में आयत 14 के दावों में यूहन्ना ने और कई ऐलान भी जोड़े हैं। उसने

लिखा है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने लोगों के सामने गवाही दी, “... कि यह वही है, जिसका मैं ने वर्णन किया, कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बड़कर है क्योंकि वह मुझ से पहिले था” (1:15)। यूहन्ना ने आगे कहा कि जैसे परमेश्वर द्वारा दी गई मूसा की व्यवस्था अद्भुत थी, वैसे ही अनुग्रह और सच्चाई यीशु में कार्यान्वित हुई थी। पुराने नियम में बहुत सा अनुग्रह मिलता है और निश्चय ही व्यवस्था अपने आप में सही थी। परन्तु जो कुछ व्यवस्था के द्वारा आरम्भ किया गया या उसका संकेत दिया गया था वह यीशु में ही पूरा हुआ! व्यवस्था की तुलना समय पर कार्यक्रम देने वाले एक ट्रांज़िस्टर रेडियो से करने पर हम कह सकते हैं कि यीशु परमेश्वर का सी डी प्लेयर है, जिसमें बिना किसी रुकावट के परमेश्वर का संगीत आता है। व्यवस्था की तुलना किसी अंधेरी गुफा की छत पर कोयले से बनाए चित्र से करने पर, हम कह सकते हैं कि यीशु परमेश्वर का डिजिटल टीवी संदेश है, जिसमें स्पष्ट संकेत अर्थात् पूरा प्रकाश है और कोई कमी नहीं है!

यूहन्ना ने यह कहकर इस आयत को समाप्त किया कि किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा है। पुराने नियम में हम उन लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिनका मानना था कि उन्होंने परमेश्वर को देखा और डर गए थे क्योंकि उन्हें भय था कि परमेश्वर को देखने वाला जीवित नहीं रह सकता। यूहन्ना ने संकेत दिया कि इन लोगों ने परमेश्वर के संदेशवाहकों (या स्वर्गदूतों) को तो देखा था पर परमेश्वर को कभी नहीं देखा था। इसलिए यह जानना और भी महत्वपूर्ण लगता है कि जो आदि से था अर्थात् जो परमेश्वर है अर्थात् “परमेश्वर का इकलौता, जो पिता की गोद में है” (1:18) वह यीशु नासरी बनकर हम पर परमेश्वर को प्रकट करने के लिए आया! हमें उसकी तरह कभी किसी ने परमेश्वर के बारे में नहीं बताया।

सारांश

यह जानते हुए कि परमेश्वर की महिमा को देखेंगे, हम यूहन्ना रचित सुसमाचार पढ़ने लगते हैं। जब हम यीशु को देख और सुन रहे होंगे, तो वह “देह” में “महिमा” को प्रकट करके “महिमा” को नया अर्थ देगा। फिर, यीशु को देखकर कि वह सामान्य जीवन के अनुभवों में “महिमा” को कैसे लाया और कैसे लोगों के सामने आता है, हम देखने लगते हैं कि साधारण लोगों द्वारा साधारण स्थानों में साधारण परिस्थितियों में “महिमा” कैसे देखी जा सकती है। मनोरंजन के युग में जहां हमें “महिमा” को केवल आराधना के अनुभवों में, अधिकतर आत्मा की प्रेरणा के अवसरों में, या प्रभावशाली प्रचार में विचार करने की परीक्षा आती है, यूहन्ना हमें स्मरण दिलाता है कि यीशु ने अपनी हर बात में परमेश्वर की “महिमा” दिखाई।

ईश्वरीय विरोधाभास परमेश्वर/देहधारी उलझाने वाला हो सकता है, परन्तु हमारे लिए यीशु को समझने के लिए यह निर्णायक है। देहधारी हुआ वचन हमारे उद्धार के लिए और हम पर परमेश्वर की महिमा प्रकट करने के लिए आया। यूहन्ना रचित सुसमाचार को आगे पढ़ने से, हमें पता चलता है कि हम एक मनुष्य से अधिक को अर्थात् परमेश्वर की महिमा को देख रहे हैं!

पाद टिप्पणियां

¹माइकल पी. ग्रीन, *इलस्ट्रेशनन्ज़ फॉर बिब्लिकल प्रीचिंग* (ग्रेंड रैपिड्स मिशी: बेकर बुक हाउस, 1982), 48-49. ²सी. एच. डॉड, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ द फोर्थ गोस्पल* (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1958) 206. ³लियोन मौरिस, *एक्सपोजिटरी रिफ्लेक्शन्ज़ ऑन द गाँस्पल ऑफ जॉन* (ग्रेंड रैपिड्स मिशी: बेकर बुक हाउस, 1988), 17. ⁴मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36.